सरिस्का
बाघ परियोजना

गौरवमयी अतीत का पुनर्जीवन

सरिस्का बाघ परियोजना

अरावली की गोद में छिपा प्राकृतिक स्वर्ग

सरिस्का बाघ परियोजना जो कि राजस्थान के अलवर ज़िले में है, विश्व की प्राचीनतम पर्वतमालाओं में से एक अरावली श्रृंखला की गोद में स्थित है। यह अभयारण्य उष्ण कटिबंधीय शुष्क पतझड़ी वन तथा कांटेदार वन के सुंदर मिश्रण से युक्त है, तथा इसके भू-भाग में अनेक घाटियाँ एवं लहराते हुए पठारी क्षेत्र विद्यमान हैं।

सरिस्का टाइगर रिज़र्व कुल 1213.34 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला हुआ है, जिसमें 881.11 वर्ग किलोमीटर का कोर या महत्वपूर्ण बाघ आवास क्षेत्र तथा 332.23 वर्ग किलोमीटर का बफर क्षेत्र शामिल है।

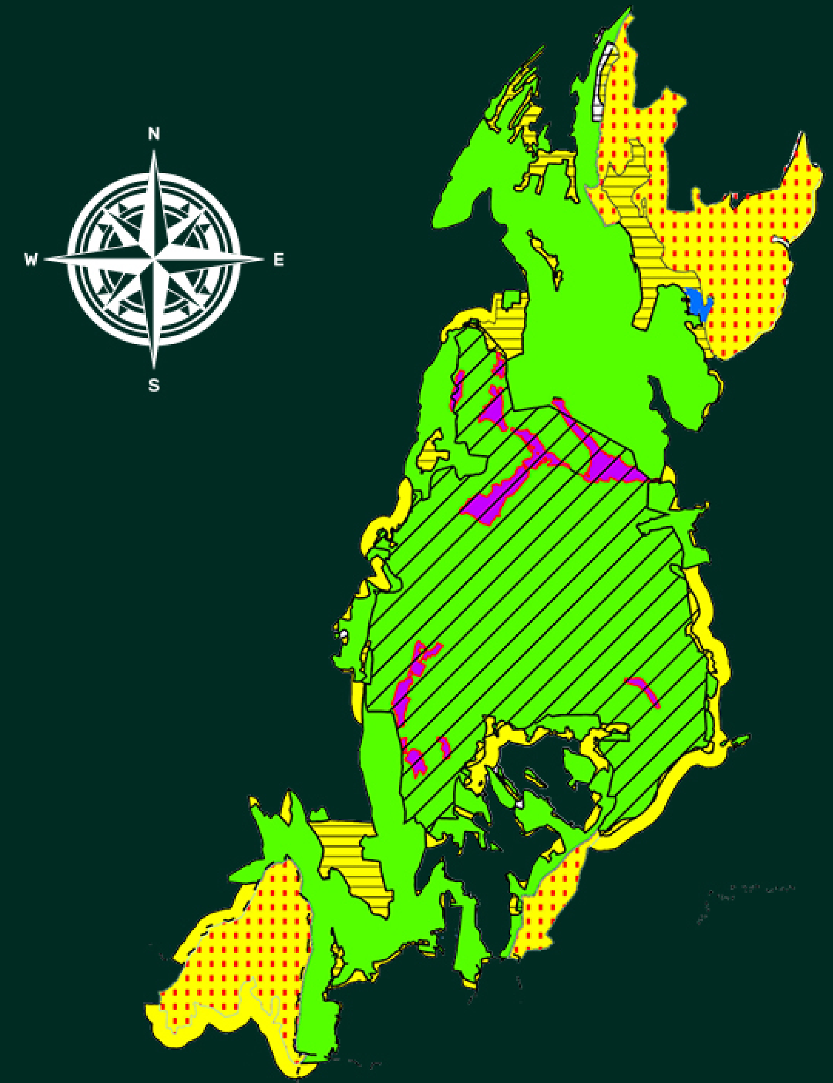

सरिस्का की विकास यात्रा

एक समय के शिकार स्थल से आज के संरक्षित वन तक

स्वतंत्रता से पूर्व काल

अलवर रियासत की शाही शिकारगाह के रूप में प्रसिद्ध।

1955

राजस्थान वन्य जीव और पक्षी संरक्षण अधिनियम, 1951 के अंतर्गत अभयारण्य घोषित।

1958

आरक्षित क्षेत्र की सीमा में संशोधन व विस्तार।

1978

सरिस्का को भारत का 11वाँ टाइगर रिज़र्व घोषित किया गया।

1982

सरिस्का राष्ट्रीय उद्यान की प्रारंभिक अधिसूचना जारी।

2007

क्रिटिकल टाइगर हैबिटेट (कोर बाघ आवास क्षेत्र) अधिसूचित।

2012

बफर ज़ोन की अधिसूचना जारी।

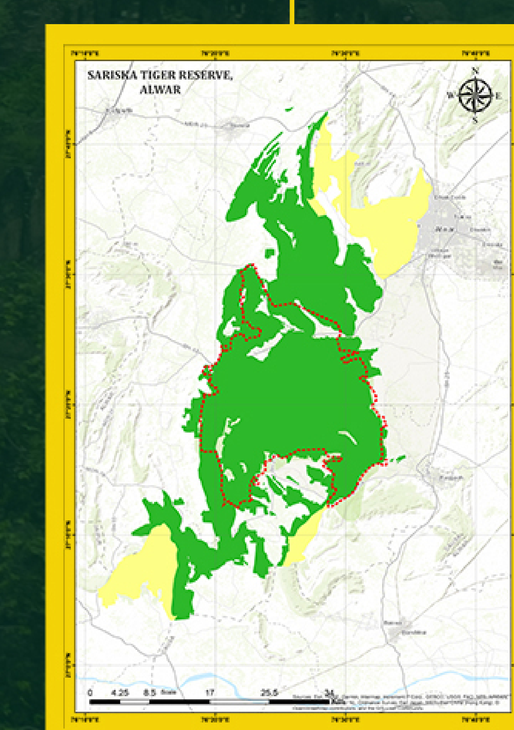

सरिस्का, कभी अलवर रियासत का राजकीय शिकार क्षेत्र हुआ करता था। उस समय के तत्कालीन महाराजा इस क्षेत्र का उपयोग शिकार के लिए नियमित रूप से करते थे। स्वतंत्रता के पश्चात, वर्ष 1955 में सरिस्का को वन्यजीव अभयारण्य घोषित किया गया, जिससे इसकी समृद्ध जैव विविधता को संरक्षित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल हुई।

बाद में, वर्ष 1978 में "प्रोजेक्ट टाइगर" के अंतर्गत इसे टाइगर रिज़र्व का दर्जा प्रदान किया गया, जिससे यह देश का 11 वां टाइगर रिज़र्व बना। इसका उद्देश्य क्षेत्र में निवासरत बाघों की घटती संख्या की रक्षा करना था। शिकारस्थल से संरक्षित वन क्षेत्र के रूप में सरिस्का का रूपांतरण, वन्यजीव संरक्षण की दिशा में एक महत्वपूर्ण बदलाव को दर्शाता है।

सरिस्का में बाघ पुनर्स्थापन

बाघ पुनर्स्थापन का एक अग्रणी प्रयास

वर्ष 2004 तक सरिस्का टाइगर रिज़र्व में सभी बाघों का अवैध शिकार होने के कारण पूरी तरह से बाघ विहीन हो गया था। सरिस्का में बाघों के इस स्थानीय विलुप्ति की घटना ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर व्यापक चिंता और आक्रोश उत्पन्न किया।

इसके पश्चात, वर्ष 2008 में विश्व का पहला बाघ पुनर्स्थापन कार्यक्रम सरिस्का में प्रारंभ किया गया, जिसके अंतर्गत रणथंभौर टाइगर रिज़र्व से बाघों को स्थानांतरित कर सरिस्का में बसाया गया। आने वाले वर्षों में कुल 11 बाघों का सफल पुनर्स्थापन किया गया।

इस बाघ पुनर्स्थापन कार्यक्रम के साथ-साथ गहन निगरानी प्रणाली, सशक्त गश्त व अवैध शिकार विरोधी प्रयास, पर्यावास सुधार कार्य, तथा ग्राम विस्थापन जैसे बहुआयामी संरक्षण प्रयास भी क्रियान्वित किए गए, जिन्होंने सरिस्का में बाघों की वापसी को संरक्षित भविष्य की दिशा में अग्रसर किया।

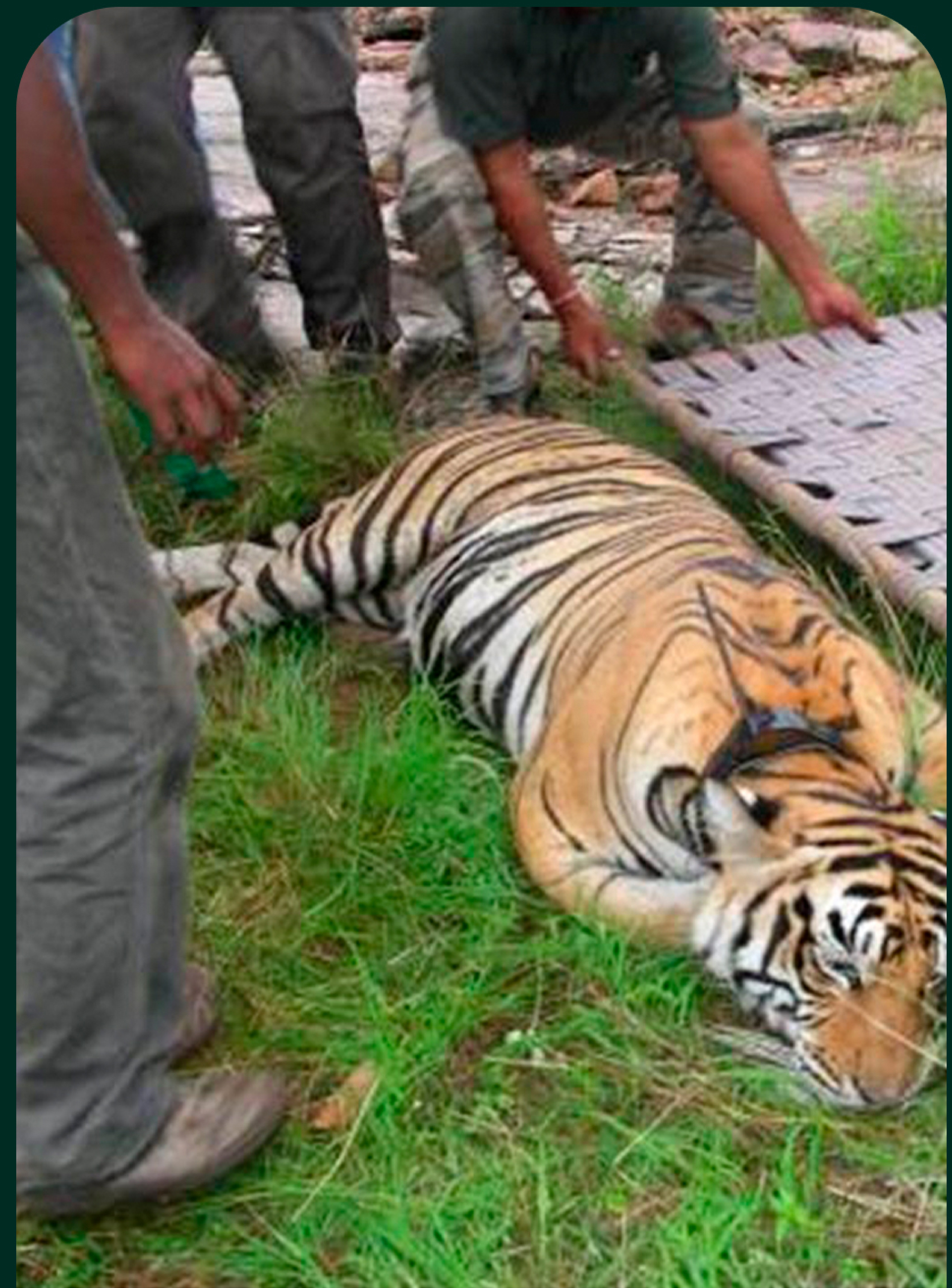

सरिस्का का पुनर्जीवन

बाघ पुनर्स्थापन का एक अग्रणी प्रयास

वर्ष 2004 से 2008 के बीच सरिस्का एक “बाघविहीन” टाइगर रिज़र्व था, लेकिन पुनःस्थापन प्रयासों के बाद जुलाई 2025 तक यहां बाघों की संख्या बढ़कर 48 हो गई है। सिर्फ दो वर्षों 2024 और 2025 के बीच ही, सरिस्का में 20 शावकों का जन्म हो चुका है।

यह दुनिया में बाघ पुनर्स्थापन का पहला सफल प्रयास है और बाघों के वैश्विक संरक्षण में एक प्रमुख मील का पत्थर है।

सरिस्का के परभक्षीः

बाघ और अन्य मांसाहारी वन्यजीव

बाघ अभयारण्य में बाघ सर्वोच्च शिकारी होता है, जो इस क्षेत्र के पारिस्थितिक संतुलन को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

बाघ के अलावा, सरिस्का में तेंदुए, धारीदार लकड़बग्घा, सुनहरे सियार और भारतीय लोमड़ियों जैसे बड़े मांसाहारी जानवरों के साथ-साथ रैंटल, एशियाई पाम सिवेट, छोटी भारतीय सिवेट, जंगली बिल्ली और नेवले जैसे छोटे मांसाहारी जानवरों की भी अच्छी-खासी आबादी पाई जाती है।

सरिस्का में पूर्व में कैराकल तथा जंगली कुत्ते जैसे मांसाहारी जीवों की उपस्थिति दर्ज की गई है।

सरिस्का की शाकाहारी संपदा

बाघों और अन्य शिकारी जीवों के जीवन का आधार

सरिस्का अनेक शाकाहारी वन्यजीव प्रजातियों का आश्रय स्थल है, जिनमें सांभर, चीतल, नीलगाय, जंगली सुअर तथा दुर्लभ चौसिंगा (चार सींग वाला मृग) प्रमुख हैं। साथ ही, रीसस मकाक (लालमुंह बंदर) तथा लंगूर जैसे प्राइमेट भी सरिस्का में व्यापक रूप से पाए जाते हैं।

सरिस्का बाघ परियोजना में शाकाहारी वन्यजीवों का घनत्व बेहद संतुलित और समृद्ध है, जो राजस्थान के टाइगर रिज़र्व्स में सबसे अधिक माना जाता है।

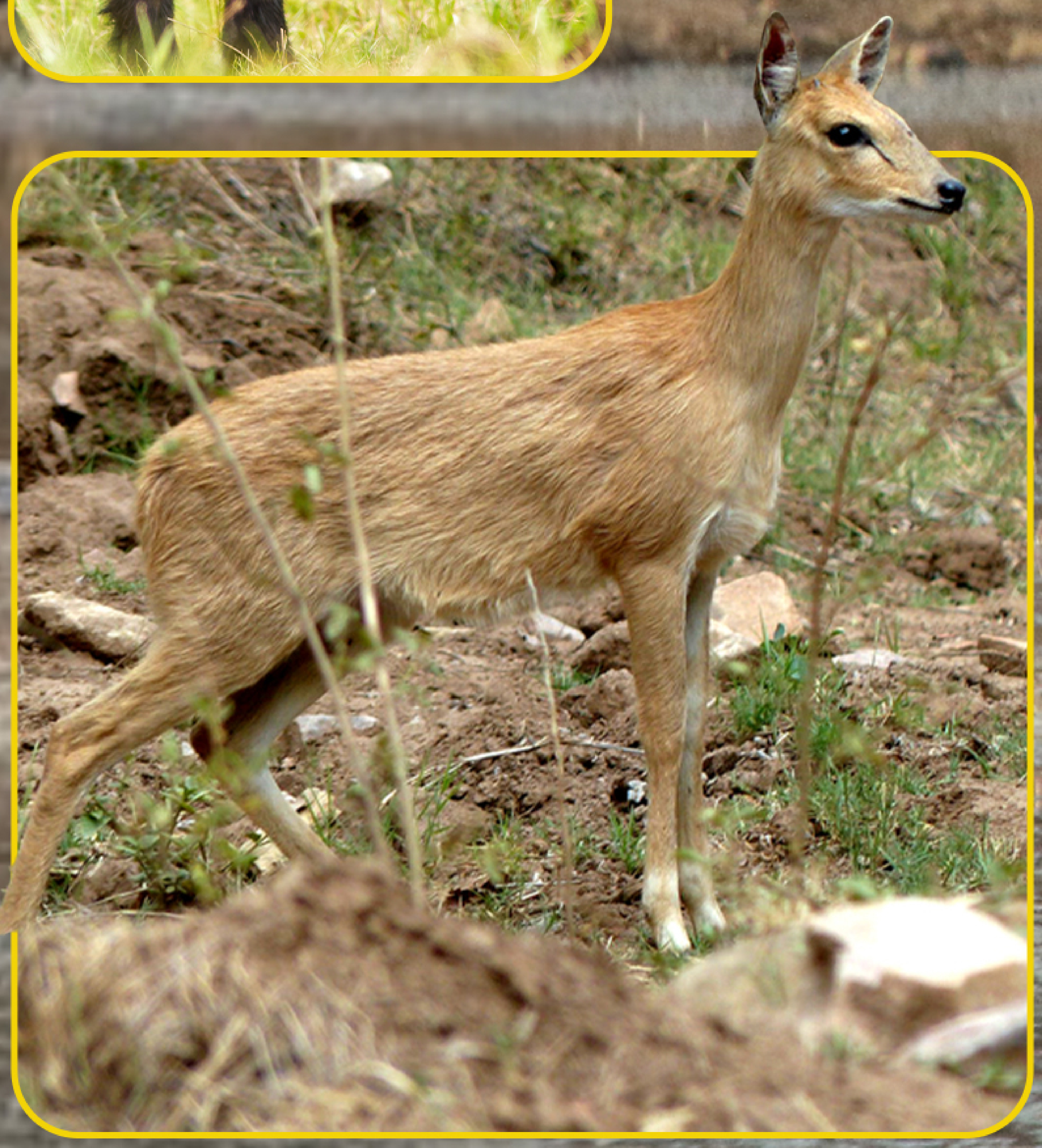

सरिस्का में पाए जाने वाले पक्षी व उनकी विविधता

सरिस्का बाघ परियोजना में पक्षियों की 272 से अधिक प्रजातियाँ पाई जाती हैं, जिनमें शीतकालीन प्रवासी पक्षी भी शामिल हैं। यहाँ मोर और तीतर बहुतायत में पाए जाते है।

कुछ प्रमुख और आकर्षक पक्षी प्रजातियाँ हैं: गिद्ध (Red-headed Vulture), पेरेग्रीन फाल्कन (दुनिया का सबसे तेज उड़ने वाला पक्षी), क्रेस्टेड सर्पेंट ईगल, भारतीय पिट्टा, बजॅर्ड, भारतीय उल्लू, पैराडाइज़ फ्लाईकैचर, सुनहरी गौरैया, काला तीतर, रेड स्परफाउल (केवल अरावली क्षेत्र में पाया जाने वाला), पेंटेड सैंडग्राउज़।

यह पक्षी विविधता सरिस्का की पारिस्थितिक समृद्धि और जैव विविधता की पहचान है, जो पक्षी प्रेमियों और पर्यटकों के लिए विशेष आकर्षण का केंद्र है।

सरिस्का की समृद्ध जैविक विविधता

सरिस्का में सरीसृपों की समृद्ध जैव विविधता है। भारतीय कोबरा, कॉमन क्रेत और रसेल वाइपर जैसे कई विषैले साँपों के साथ-साथ रॉक पाइथन और सैंड बोआ जैसे गैर-विषैले साँप भी इस क्षेत्र में पाए जाते हैं।

बंगाल मॉनिटर लिज़र्ड पूरे सरिस्का में काफी आम है। करणाकाबास और सिलिसेढ़ झीलों में मगरमच्छ और फ्लैपशेल कछुए देखे जा सकते हैं।

सरिस्का की वनस्पतियाँ

वृक्ष प्रजातियों का समृद्ध भंडार

सरिस्का बाघ परियोजना में 404 से अधिक पौधों की प्रजातियों होने के कारण प्रकृति की भव्यता का प्रमाण बना हुआ है।

धोंक प्रमुख वृक्ष प्रजाति है, जो 80 प्रतिशत से अधिक वन क्षेत्र में पायी जाती है। जबकि सालर और गुर्जन चट्टानी इलाकों में पनपते हैं, कत्था, पलास और बेर मुख्य रूप से घाटियों में पाए जाते हैं। यहाँ आपको सीरीस, टेंडू, पापड़ी और अंजीर की विभिन्न प्रजातियाँ देखने को मिलती हैं। दरअसल, "सरिस्का" नाम की उत्पत्ति "सीरीस" पेड़ से मानी जाती है, जो अपने सुंदर पीले फूलों वाली छटा के लिए प्रसिद्ध है।

इनके अलावा, कुछ उल्लेखनीय वृक्ष प्रजातियाँ हैं-अर्जुन, गुगल, कडाया, आंवला, बहेड़ा और हिंगोट है।

सरिस्का की प्राकृतिक छटा

ऋतु दर ऋतु

मानसून के दौरान, यह अभयारण्य हरी-भरी घासों और फूलों वाली जड़ी-बूटियों से जीवंत हो उठता है। ये वर्षा ऋतु में शाकाहारियों का मुख्य आहार हैं और जमीन पर घोंसला बनाने वाले पक्षियों और छोटे स्तनधारियों के लिए आश्रय स्थल का काम करती हैं।

सरिस्का की मुख्य झाड़ीदार प्रजातियाँ जाल, केर, छोटा बेर और चापरेन हैं, जो शाकाहारियों के लिए मूल्यवान भोजन स्रोत के साथ-साथ शुष्क महीनों के दौरान कई जीवों के लिए आश्रय स्थल का काम करती है।

बॉस (डेंड्रोकैलेमस स्ट्रिक्टस) का सरिस्का बाघ अभयारण्य में सीमित वितरण है, यह नदियों के किनारे और पहाड़ियों के नम, ठंडे भागों में पाया जाता है।

प्रकृति से परे

सरिस्का की अद्भुत स्थापत्य धरोहर

सरिस्का बाघ परियोजना केवल बाघों और जंगलों के लिए ही नहीं, बल्कि अपनी ऐतिहासिक और स्थापत्य विरासत के लिए भी जाना जाता है। यहाँ जंगलों के बीच कई पुराने किले, मंदिर और महल छिपे हुए हैं जो अतीत की कहानी सुनाते हैं।

सबसे खास है नीलकंठ महादेव मंदिर, जो प्रतिहार काल की सुंदर मूर्तिकला और स्थापत्य का अद्भुत उदाहरण है। इसके अलावा, बाला किला (15वीं शताब्दी), कांकवाडी किला (17वीं शताब्दी) और सरिस्का पैलेस (19वीं शताब्दी), जो राजस्थानी और यूरोपीय शैलियों का सुंदर मेल है।

सरिस्का के पास ही स्थित है भानगढ़ का प्रसिद्ध किला, जिसकी रहस्यमयी कहानियाँ और खंडहर इसे भारत के सबसे चर्चित ऐतिहासिक स्थलों में से एक बनाते हैं।

सरिस्का के आध्यात्मिक और सांस्कृतिक स्थल

सरिस्का बाघ परियोजना का क्षेत्र धार्मिक दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है, जिसकी जड़ें प्राचीन पौराणिक कथाओं और आध्यात्मिक परंपराओं में निहित हैं। रिज़र्व क्षेत्र में अनेक मंदिर और धार्मिक स्थल स्थित हैं। प्रमुख मंदिरों में पांडुपोल हनुमान मंदिर (जिसका संबंध महाभारत काल से जोड़ा जाता है), भर्तृहरि मंदिर, नारायणी माता मंदिर, कर्णी माता मंदिर तथा नलदेश्वर महादेव मंदिर प्रमुख हैं।

ये श्रद्धा के केंद्र स्थल घने जंगलों और प्राकृतिक सौंदर्य से आच्छादित हैं, जहाँ धरोहर, पौराणिकता और प्राकृतिक छटा का अनूठा संगम देखने को मिलता है। यही विशेषताएँ इन्हें श्रद्धालुओं और पर्यटकों दोनों के लिए आकर्षण का प्रमुख केंद्र बनाती हैं।

सरिस्का का पुनरुत्थान

वन विभाग की भूमिका

सरिस्का बाघ परियोजना में वन विभाग ने क्षेत्र की वन्यजीव संपदा, विशेष रूप से बाघों के संरक्षण और पुनर्जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यहाँ बाघों की 24x7 निगरानी की अनूठी व्यवस्था, जिसमें स्थानीय समुदाय की सक्रिय भागीदारी शामिल है, सरिस्का को अन्य टाईगर रिजर्व से विशिष्ट बनाती है।

संरक्षण कार्य के अंतर्गत पूरे रिज़र्व में शिकार रोधी कैम्प (Anti-Poaching Camps) की स्थापना और संरक्षण सड़कों (Protection Roads) का निर्माण किया गया है, जिससे क्षेत्र की सतत निगरानी और सुरक्षा सुनिश्चित हो सके। इसके अतिरिक्त, पर्यावास सुधार कार्यों में झाडियों एवं खरपतवारों की सफाई, चरागाह विकास, तथा मृदा एवं जल संरक्षण से संबंधित कार्यों को प्राथमिकता दी जा रही है।इन गतिविधियों से सरिस्का का प्राकृतिक आवास वन्यजीवों के लिए अधिक उपयुक्त बन रहा है।

मानव और प्रकृति के बीच सामंजस्य

सरिस्का में पुनर्वास एवं संरक्षण के प्रयास

सरिस्का के आंतरिक क्षेत्रों से गाँवों का पुनर्वास वन विभाग का एक सतत प्रयास है। यह प्रयास वन्यजीवों के प्राकृतिक आवास को बेहतर बनाने तथा मानव-वन्यजीव संघर्ष को कम करने के लिए अत्यंत आवश्यक है।

स्थानीय समुदाय की सहभागिता को भी प्राथमिकता दी जा रही है। ग्रामीणों को "बाघ मित्र" के रूप में नियुक्त कर वन सुरक्षा में उनकी भूमिका सुनिश्चित की जा रही है। साथ ही, स्कूली बच्चों व युवाओं के लिए वन भ्रमण और संवादात्मक कार्यक्रमों के माध्यम से संरक्षण के प्रति जागरूकता बढ़ाई जा रही है। इन प्रयासों से स्थानीय ग्रामवासियों में वनों के प्रति सकारात्मक भावना विकसित हो रही है, जो दीर्घकालीन संरक्षण के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

सरिस्का बाघ परियोजना, राजस्थान के अलवर ज़िले में अरावली की पहाड़ियों के बीच स्थित है और यह देश का एकमात्र बाघ अभयारण्य है जो राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (एनसीआर) के अंतर्गत आता है।

कभी अलवर रियासत के शाही शिकार स्थल के रूप में प्रसिद्ध रहा सरिस्का, स्वतंत्रता के बाद एक संरक्षित क्षेत्र में परिवर्तित हुआ, जो संरक्षण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम था। वर्ष 2004 तक शिकार के कारण यहाँ बाघों की संख्या शून्य हो गई थी। इसके बाद 2008 में यहाँ विश्व का पहला सफल बाघ पुनर्वास कार्यक्रम शुरू हुआ, और जुलाई 2025 तक यहाँ बाघों की संख्या बढ़कर 48 हो गई जो वैश्विक संरक्षण प्रयासों में एक ऐतिहासिक उपलब्धि है।

सरिस्का बाघ परियोजना न केवल वन्य जीवन और जैव विविधता में समृद्ध है, बल्कि यहाँ के प्राचीन किले और पूजनीय मंदिर इसके प्राकृतिक और सांस्कृतिक धरोहर को एक साथ समेटे हुए हैं।

स्थान:
नई दिल्ली से दूरी – 190 किमी
जयपुर से दूरी – 110 किमी

कैसे पहुँचे:
निकटतम रेलवे स्टेशन – अलवर
निकटतम हवाई अड्डा – जयपुर

मौसम:
गर्मी – अप्रैल से जून
सर्दी – नवम्बर से जनवरी

पर्यटन सूचना (सरिस्का में पर्यटन):
कोर और बफर ज़ोन – 1 अक्टूबर से 30 जून तक खुले रहते हैं।
मानसून काल (1 जुलाई से 30 सितम्बर) – केवल बफर ज़ोन में प्रवेश की अनुमति होती है।

संपर्क विवरण:

वन संरक्षक एवं क्षेत्र निदेशक
प्रोजेक्ट टाइगर, सरिस्का
ईमेल: cf.str.forest@rajasthan.gov.in

उप वन संरक्षक एवं उप क्षेत्र निदेशक
प्रोजेक्ट टाइगर, सरिस्का
ईमेल: dcfsariska@gmail.com